INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में निर्माण उद्योग और निर्माण श्रमिकों का योगदान तथा निर्माण श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

(Contribution of Construction Industry and Construction Workers in the Development of Indian Economy and Socio-Economic Condition of Construction Workers)

चंद्र प्रकाश खटीक
शोधार्थी,
अर्थशास्त्र विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)

डॉ. प्रवीण पांड्या
आचार्य,
अर्थशास्त्र विभाग,
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
खेरवाड़ा, उदयपुर (राज.)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/03.2025-19853731/IRJHIS2503022

शोध सार:

निर्माण उद्योग किसी भी देश के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत का निर्माण उद्योग दुनिया भर में अमेरिका, चीन और जापान के बाद चौथा सबसे बड़ा उद्योग है। निर्माण श्रमिक सड़क, पुल और इमारतों जैसे आवश्यक बुनियादी ढाँचे के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो आर्थिक विकास और शहरीकरण के लिए महत्वपूर्ण हैं।निर्माण उद्योग में असंगठित क्षेत्र के अधिकतम श्रमिक कार्यरत हैं। इन श्रमिकों में से अधिकतम प्रवासी श्रमिक हैं। तेजी से बढ़ते शहरीकरण और कम कुशल श्रमिकों की उच्च मांग के कारण ये श्रमिक इस उद्योग की ओर आकर्षित होते हैं।

वर्तमान अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ किया गया था – (1) भारतीय अर्थव्यवस्था में निर्माण उद्योग और निर्माण श्रमिकों के योगदान का अध्ययन करना (2) निर्माण श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उनके सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना। (3) निर्माण श्रमिकों के कल्याण के लिए सुझाव देना।वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से उपलब्ध द्वितीयक आंकड़ों और अन्यशोध अध्ययन पर आधारित है।

कई अध्ययनों में पाया गया है कि निर्माण श्रमिक हमारे समाज के सबसे गरीब वर्गों में से एक हैं जो घोर गरीबी में जी रहे हैं। उनमें साक्षरता दर बहुत कम है और जो शिक्षित हैं वे बहुत कम शिक्षित हैं। ये श्रमिक प्रतिकूल कार्य स्थितियों के शिकार हैं, जो स्वास्थ्य संबंधी खतरों के अधीन हैं। उनका रोजगार पूरी तरह से अस्थायी प्रकृति का है। काम पर उन्हें सुरक्षा उपाय प्रदान नहीं किए जाते हैं, और इस वजह से उन्हें हमेशा चोट लगने, दुर्घटना होने और यहाँ तक कि मृत्यु का भी खतरा बना रहता है।

कुल मिलाकर, भारत में निर्माण श्रमिकों को महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें बड़े परिवार, सीमित शैक्षिक अवसर और अनिश्चित आर्थिक स्थितियाँ शामिल हैं। इन मुद्दों को संबोधित करना उनके कल्याण में सुधार और अर्थव्यवस्था में उनके योगदान को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।

निर्माण श्रमिकों के सामने आने वाली चुनौतियों को देखते हुए, उनके कल्याण के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं।प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्माण श्रमिकों के कौशल को बढ़ा सकते हैं।निर्माण श्रमिकों को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने और अपने कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक निभाने के लिए स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए। प्रदर्शन-आधारित पुरस्कार कार्यक्रमों को लागू करने से निर्माण श्रमिकों को अधिक उत्पादकता और कुशलता से काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

उपरोक्त वर्णितबाधाओं केबावजूद निर्माण उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक है। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है और इसके बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए आवश्यक है।जबकि निर्माण क्षेत्र बड़े पैमाने पर रोज़गारपैदा करता है, उत्पादकता और आर्थिक दक्षता बढ़ाने के लिए कौशल विकास की आवश्यकता है। इस चुनौती का समाधान करने से जीडीपी वृद्धि में अधिक टिकाऊ और प्रभावी योगदान हो सकता है।

मुख्य शब्द (Key Words): *निर्माण उद्योग, निर्माण श्रमिक, रोजगार, समस्याएं,असंगठित क्षेत्र*

परिचय :

निर्माण उद्योग किसी भी देश के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत का निर्माण उद्योग दुनिया भर में अमेरिका, चीन और जापान के बाद चौथा सबसे बड़ा उद्योग है। इस उद्योग का वर्तमान बाजार आकार 639 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, जिसका अनुमानित वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर (CAGR) 6% है। निर्माण उद्योग में असाधारण वृद्धि मुख्य रूप से सरकार के बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष ध्यान देने के कारण है। इसमें शहरी बुनियादी ढांचे, परिवहन, सड़क, सिंचाई और रियल एस्टेट जैसे क्षेत्रों में मेगा-प्रोजेक्ट शामिल हैं। भारत के 2025 तक दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा निर्माण बाजार बनने की उम्मीद है, जिसका मूल्य 1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर होगा(सिकेजेन, 2024)।10% की वार्षिक वृद्धि दर के साथ, यह सबसे तेजी से बढ़ते उद्योगों में से एक है। यह एक बड़े कार्यबल को रोजगार देता है और विभिन्न प्रकार के कार्यों में संलग्न है।निर्माण श्रमिक भारतीय समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो देश के आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। भारत में निर्माण श्रमिक कई प्रमुख तंत्रों के माध्यम से देश के आर्थिक विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। निर्माण श्रमिक सड़क, पुल और इमारतों जैसे आवश्यक बुनियादी ढाँचे के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो आर्थिक विकास और शहरीकरण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

हमारे देश में 92% श्रमिक असंगठित क्षेत्र में हैं और इनमें से 50% निर्माण श्रमिक हैं, इस प्रकार उनका प्राथमिक रोजगार असंगठित क्षेत्र में है (धमाल, 2018)। निर्माण उद्योग में असंगठित क्षेत्र के अधिकतम श्रमिक कार्यरत हैं। इन श्रमिकों में से अधिकतम प्रवासी श्रमिक हैं। तेजी से बढ़ते शहरीकरण और कम कुशल श्रमिकों की उच्च मांग के कारण ये श्रमिक इस उद्योग की ओर आकर्षित होतेहैं।

साहित्य की समीक्षा :

आर. एस. तिवारी ने अपनी पुस्तक इनफॉर्मल सेक्टर वर्कर्स : प्रोब्लेम्स एंड प्रॉस्पेक्ट्स (2005) में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों की समस्याओं पर ध्यान क्रेंद्रित करते हुए हुए अर्थव्यवस्था में उनके योगदान को रेखंकित करने काप्रयास किया है। लेखक ने असंगठित क्षेत्र में भविष्य में उत्पन्न होने वाले रोजगार का विशद विवरण प्रस्तुत करते हुए इस क्षेत्र में अनेक संभावनाओंपर भी चर्चा की है। लेखक के अनुसार भारत में असंगठित क्षेत्र में रोजगारकी व्यापक संभावनाएं मौजूद हैं अतः सरकार को इन्हेंप्रोत्साहन देना चाहिए ताकि देश में रोजगार के नये अवसर पैदा हो सकें।

वेंकट रत्नम ने अपने महत्वपूर्ण ग्रन्थ सोशल सिक्योरिटी अन आर्गनाइज्ड सेक्टर (2006) में भारत असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं काआलोचनात्मक परिक्षण प्रस्तुत किया है1 लेखक के मत में सरकार द्वारा इन योजनाओं की कठोरता से लागू करना चाहिए जिससे अधिक से अधिक श्रमिक लाभान्वित हो सके क्योकि भारत में इन श्रमिकों की संख्या काफी अधिक है और उन्हें इन योजनाओं का लाभ आंशिक रूप से ही मिल रहा है

संजय तिवारी एवं कांशीराम सिंह(2010) ने अपनी महत्वपूर्ण कृति भारत में सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का गहनता से आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है। लेखकों के मत में असंगठितक्षेत्र में श्रमिकों को को सामाजिक सुरक्षा तभी प्राप्त हो सकती है जब श्रम कानूनों को कठोरता से लागू किया जाए और इनके कल्याण के लिए बनायीं गयी योजनाओं का क्रियान्वयन उचित तरीके से करने का प्रयास किया जाए।

किशोर सेमल ने अपनी पुस्तक ग्रोथ ऑफ ग्रोथ ऑफ़ इनफॉर्मल सेक्टर इन इंडिया(2013) में भारत में असंगठित क्षेत्र के विकास पर फोकस करते हुए स्वतंत्रता के बाद से अब तक असंगठित क्षेत्र में हुए परिवर्तनों और विकास पर बल देते हुए इसे भारतीय अर्थव्यवस्था

का महत्वपूर्ण घटक बताया है। लेखक के विचार में भारत में अधिकांश श्रमिक असंगठित क्षेत्र मेंही कार्यरत हैं अतः सरकार इस क्षेत्र पर विशेष ध्यान देकर इसके विकास को बढ़ावा देना चाहिए जो काफी हद तक देश में बेरोजगारी की समस्या को दूर कर सकत है।

राज और सिंह (2018) ने एक अध्ययन किया जिसका उद्देश्य भारत के वाराणसी शहर के निर्माण श्रमिकों की जनसांख्यिकीय और सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल का आकलन करना था। 508 निर्माण श्रमिकों से प्राथमिक डेटा एकत्र किया गया था। लेखकों ने पाया कि 50% से अधिक श्रमिक 20 वर्ष से 35 वर्ष की आयु वर्ग के थे। अधिकांश मजदूर अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़ा वर्ग श्रेणी से थे। इन मजदूरों की औसतमासिक आय ₹ 10,278 थी। उन्होंने पाया कि ये श्रमिक अनिश्चित कार्य घंटे, अस्वच्छ और असुरक्षित कार्य स्थितियों, कार्य-संबंधी रोगों की चपेट में आने, गंभीर चोटों, सामाजिक सुरक्षा उपायों की कमी, श्रम कानूनों के अनुचित कार्यान्वयन, श्रम कल्याण गतिविधियों की कमी, छुट्टियों का अभाव, अनुपस्थिति और विभिन्न आदतों की लत आदि जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे थे। अध्ययन ने सुझाव दिया कि कम आय वर्ग के लिए अधिक अवसर प्रदान करने के लिए सरकारी योजनाओं की तत्काल आवश्यकता थी ताकिउनकी वित्तीय समस्या काफी हद तक हल हो सके l

अध्ययन के उद्देश्य :

वर्तमान अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ किया गया था -

1. भारतीय अर्थव्यवस्था में निर्माण उद्योग और निर्माण श्रमिकों के योगदान का अध्ययन करना
2. निर्माण श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उनके सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
3. निर्माण श्रमिकों के कल्याण के लिए सुझाव देना

वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से उपलब्ध द्वितीयक आंकड़ों और अन्य अध्ययन पर आधारित है।

निर्माण उद्योग का आर्थिक योगदान :

रोजगार सृजन: निर्माण उद्योग का सकल घरेलु उत्पाद में योगदानलगभग 9% है(सिकेजेन, 2024), जो इसे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक बनाता है।निर्माण क्षेत्र भारत में कृषि क्षेत्र के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार सृजनकर्ता हैजो वर्ष 2023 तक लगभग 71 मिलियन लोगों को रोजगार दे रहा था। इन 71मिलियन लोगों में से 81% अकुशल श्रमिक हैं और 19% कुशल श्रमिक हैं। शहरीकरण और बुनियादी ढाँचे के विकास से प्रेरित होकर निर्माण उद्योग में यह रोजगार आँकड़ा 2030 तक 100 मिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है। इस प्रकार का रोजगार बेरोजगारी को कम करने और अर्थव्यवस्था में कुल माँग को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। यह अनुमन लगाया गया है कि 2000 और 2012 के बीच, निर्माण उद्योग में रोजगार सालाना 9% से अधिक की दर से बढ़ा है। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास दर सालाना 12% की दर से बहुत अधिक थी, जबकि शहरी भारत में विकास दर सालाना 5% थी (नागराज, 2016)।

राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद (एनएसडीसी) के अनुमान के अनुसार, कुल कर्मचारियों (कुशल और अकुशल) का 87 प्रतिशत हिस्सा रियल एस्टेट क्षेत्र में कार्यरत है, जबकि 13 प्रतिशत हिस्सा बुनियादी ढांचा क्षेत्र में कार्यरत है।

भारत की शहरी आबादी में 2030 तक उल्लेखनीय वृद्धि होने का अनुमान है इसलिए निर्माण श्रमिक आवास और शहरी बुनियादी ढांचे की मांग को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे। रियल एस्टेट कंसल्टेंट नाइट फ्रैंक इंडिया और रॉयल इंस्टीट्यूशन ऑफ चार्टर्ड सर्वेयर्स (आरआईसीएस) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय रियल एस्टेट क्षेत्र से उत्पन्न उत्पादन मौजूदा 650 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2030 तक 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।

भारत के आर्थिक विस्तार के पिछले दस वर्षों में, बुनियादी ढांचे और रियल एस्टेट विकास और सेवाओं दोनों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बुनियादी ढांचे और रियल एस्टेट विकास औरसेवाओं दोनों का उत्पादन11% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़ा है। रियल एस्टेट सेवाओं और घर के स्वामित्व से होने वाले राजस्व के साथ, भवन उद्योग अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन का 18% हिस्सा है। इसके अलावा, अर्थव्यवस्था से कई लिंक के साथ, यह उद्योग दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है।

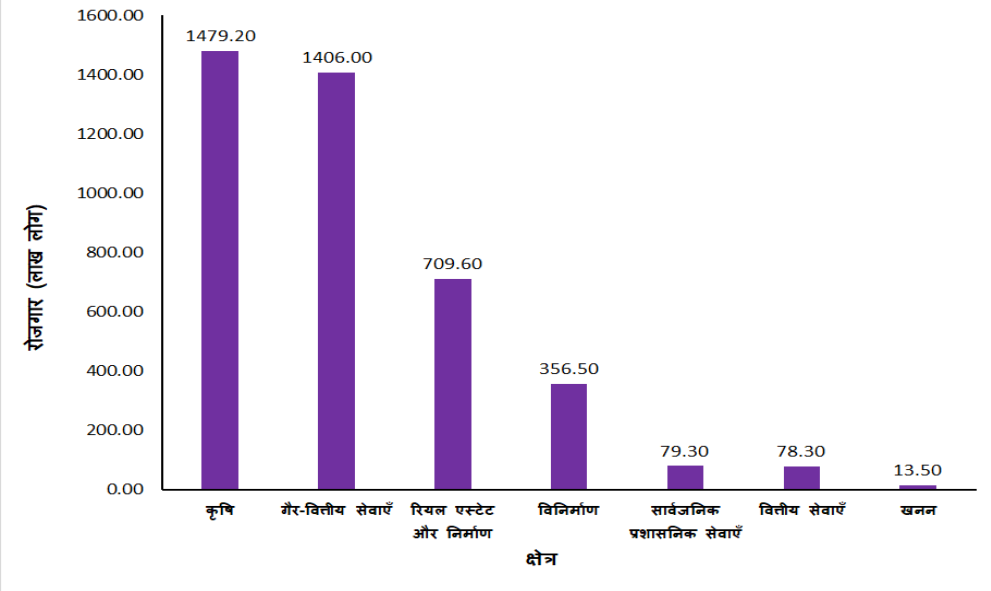

Data Source: Digital Labour Chowk (2024)

चित्र संख्या 1: वित्तीय वर्ष 2023 में भारत में प्रमुख क्षेत्रों में कार्यरत लोगों की संख्या

रियल एस्टेट सेवाओं और आवासों के स्वामित्व से उत्पन्न उत्पादन के साथ निर्माण क्षेत्र, अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन में 18% का योगदान देता है जो कि जीडीपी वृद्धि के साथ अत्यधिक सहसंबद्ध है। जैसेजैसे निर्माण क्षेत्र का विस्तार होगा, यह समग्र आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देता रहेगा।

निर्माणक्षेत्र अर्थव्यवस्था से कई तरह के संबंधों के साथ दूसरा सबसे बड़ारोजगार सृजनकर्ता है। नाइट फ्रैंक रिसर्च के अध्ययन के एक अनुमान के अनुसार, भारत में निर्माण क्षेत्र में रोजगार लोच 1.124 है, जिसका अर्थ है कि उत्पादन में प्रत्येक इकाई की वृद्धि के लिए, रोजगार एक से अधिक इकाई से बढ़ता है। यह उच्च लोच दर्शाता है कि निर्माण उत्पादन में वृद्धि से पर्याप्त रोजगार सृजन होता है।

वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता के कारणनिर्माण उद्योग का विनिर्माण और सेवाओं सहित अन्य उद्योगों के साथ घनिष्ठ संबंध है। संबद्ध उद्योगोंमें विस्तार को बढ़ावा देकर, यह गुणक प्रभाव निर्माण रोजगार के आर्थिक प्रभाव को बढ़ाता है।

निवेश और उपभोग: जैसे-जैसे अधिक लोग निर्माण उद्योग में काम करते हैं, उनकी प्रयोज्य आय बढ़ती है, जिससे पूरी अर्थव्यवस्था में निवेश और उपभोक्ता खर्च को प्रोत्साहन मिलता है, जिससे सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि को और बढ़ावा मिलता है।

निर्माण श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति :

कई अध्ययनों में पाया गया है कि निर्माण श्रमिक हमारे समाज के सबसे गरीब वर्गों में से एक हैं जो घोर गरीबी में जी रहे हैं। उनमें साक्षरता दर बहुत कम है और जो शिक्षित हैं वे बहुत कम शिक्षित हैं। अधिकांश निर्माण श्रमिक प्रवासी हैं जो उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे गंभीर गरीबी वाले राज्यों से पलायन करते हैं।

ये श्रमिक प्रतिकूल कार्य स्थितियों के शिकार हैं, जो स्वास्थ्य संबंधी खतरों के अधीन हैं उनका रोजगार पूरी तरह से अस्थायी प्रकृति का है। श्रमिकों के इस कमजोर समूह के लिए सामाजिक-आर्थिक तनाव प्रमुख परिणामों में से एक है। काम पर उन्हें सुरक्षा उपाय प्रदान नहीं किए जाते हैं, और इस वजह से उन्हें हमेशा चोट लगने, दुर्घटना होने और यहाँ तक कि मृत्युका भी खतरा बना रहता है।

विभिन्न अध्ययनों से यह अनुमान लगाया गया है कि निर्माण श्रमिकों के औसत परिवार का आकार राष्ट्रीय औसत से कहीं ज़्यादा है। एक अध्ययन के अनुसार निर्माण श्रमिक परिवार का औसत आकार 6.92 सदस्य है, जबकि राष्ट्रीय औसत लगभग 4.8 सदस्य प्रति परिवार है (राज और सिंह, 2018)।

वैवाहिक स्थिति - जहाँ तक निर्माण श्रमिकों की वैवाहिक स्थिति का सवाल है, निर्माण श्रमिकों का एक बड़ा हिस्सा विवाहित है। तिवारी एट अल. (2012) के अध्ययन के अनुसार, 61%, और राज और सिंह (2018) के एक अध्ययन के अनुसार, 83% निर्माण श्रमिक विवाहित हैं और कई कम उम्र में शादी कर रहे हैं।

जबकि निर्माण श्रमिकों की शैक्षिक स्थिति पर विशिष्ट डेटा दुर्लभ है यह आम तौर पर समझा जाता है कि कई श्रमिकों के पास सीमित औपचारिक शिक्षा है। यह आंशिक रूप से सामाजिक-आर्थिक कारकों और क्षेत्र में अनौपचारिक रोजगार की प्रकृति के कारण है।

सामान्य तौर पर, निर्माण श्रमिकों की आर्थिक स्थिति आमतौर पर कमजोरहोती है। राज और सिंह (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि निर्माण श्रमिकों की औसत मासिक आय केवल ₹ 10,278 है। 86% से अधिक निर्माण श्रमिकों के पास रहने के लिए स्थायी घर नहीं है। अनौपचारिक क्षेत्र में अपने रोजगार के कारण कई निर्माण श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा लाभों तक पहुँच नहीं है, जिससे वे आर्थिक झटकों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।

कुल मिलाकर, भारत में निर्माण श्रमिकों को महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें बड़े परिवार, सीमित शैक्षिक अवसर और अनिश्चित आर्थिक स्थितियाँ शामिल हैं। इन मुद्दों को संबोधित करना उनके कल्याण में सुधार और अर्थव्यवस्था में उनके योगदान को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।

निर्माण श्रमिकों के सामने आने वाली चुनौतियाँ :

हमारे शहरों को बनाने के लिए, भारतीय निर्माण श्रमिक हर दिन खतरनाक कामकाजी परिस्थितियों में अपनी जान जोखिम में डालते हैं। बहुत से लोगों के पास स्वच्छ पानी और सैनिटरी सुविधाओं जैसी बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच नहीं है क्योंकि निर्माण स्थलों के नज़दीक छोटे, अस्थायी आश्रयों में रहते हैं। अपनी मेहनत के बावजूद, उन्हें अक्सर बहुत कम वेतन मिलता है और अपने परिवार का भरण-पोषण करना मुश्किल होता है। स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा के अवसरों तक सीमित पहुँच के कारण, स्कूली शिक्षा कभी-कभी उनके बच्चों के लिए एक दूर की कौड़ी बन जाती है।

अनौपचारिक रोजगार: निर्माण श्रमिकों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है, जो अनिश्चित कार्य स्थितियों, अपर्याप्त कल्याण सुविधाओं और सामाजिक सुरक्षा लाभों तक सीमित पहुंच जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है।

कौशल विकास और आर्थिक गतिशीलता: अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद, कई निर्माण श्रमिकों के पास कौशल संवर्धन और आर्थिक गतिशीलता के अवसरों का अभाव है, जिससे उनके करियर में उन्नति और वित्तीय स्थिरता सीमित होती है।

अपर्याप्त वेतन: अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के शोध के अनुसार, निर्माण श्रमिकों के लिए राष्ट्रीय औसत दैनिक आय 500 रुपये से 800 रुपये के बीच है; हालाँकि, कई श्रमिकों को इससे बहुत कम मिलता है, जिसके कारण वे आर्थिक रूप से असुरक्षित होते हैं और

कठिनाई का सामना करते हैं। इन श्रमिकों को सम्मानजनक जीवन स्तर प्राप्त करने के लिए, इस अंतर को कम किया जाना चाहिए (कुमार, 2024)।

लंबे समय तक काम करना: कई निर्माण श्रमिक आठ घंटे से ज़्यादा काम करते हैं और वे अक्सर लंबी और अनियमित शिफ्ट में काम करते हैं। उनके स्वास्थ्य और सामान्य सेहत के अलावा उनकी उत्पादकता और दक्षता भी प्रभावित होती है।

सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, निर्माण श्रमिक भारत के सामाजिक और आर्थिक ताने-बाने के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उनके मुद्दों को हल करना उनके कल्याण को संरक्षित करने और उनके योगदान को अनुकूलित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष एवं सुझाव:

भारत का निर्माण उद्योग दुनिया भर में अमेरिका, चीन और जापान के बाद चौथा सबसे बड़ा उद्योग है। इस उद्योग का वर्तमान बाजार आकार 639 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, जिसका अनुमानित वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर(CAGR) 6% है। भारत के 2025 तक दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा निर्माण बाजार बनने की उम्मीद है जिसका मूल्य 1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर होगा।10% की वार्षिक वृद्धि दर के साथ, यह सबसे तेजी से बढ़ते उद्योगों में से एक है। यह एक बड़े कार्यबल को रोजगार देता है।

उपरोक्त वर्णितबाधाओं के बावजूद निर्माण उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक है। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान देता है और इसके बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए आवश्यक है।जबकि निर्माण क्षेत्र बड़े पैमाने पर रोज़गार पैदा करता है, उत्पादकता और आर्थिक दक्षता बढ़ाने के लिए कौशल विकास की आवश्यकता है। इस चुनौती का समाधान करने से जीडीपी वृद्धि में अधिक टिकाऊ और प्रभावी योगदान हो सकता है।

निर्माण श्रमिकों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से की जाने वाली पहल, जैसे कि आवास सब्सिडी और कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान करना, से सामुदायिक कल्याण और सामाजिक स्थिरता में योगदान किया जा सकता है ।

बुनियादी ढाँचे के निर्माण में निर्माण क्षेत्र की भूमिका दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। कुशल बुनियादी ढाँचा विकास निवेश को आकर्षित कर सकता है, उत्पादकता में सुधार कर सकता है और निरंतर जीडीपी वृद्धि का समर्थन कर सकता है। कुल मिलाकर, निर्माण क्षेत्र का रोज़गार नौकरियों का सृजन करके, क्षेत्रीय संबंधों के माध्यम से आर्थिक गतिविधि को प्रोत्साहित करके और भारत के आर्थिक उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देकर जीडीपी वृद्धि को आगे बढ़ाया जा सकता है।

निष्कर्ष के तौर पर, जबकि भारत में निर्माण क्षेत्र कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, रोजगार प्रदान करने और आर्थिक विकास को गति देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता। आने वाले वर्षों में इस क्षेत्र का विकास देखने लायक एक महत्वपूर्ण क्षेत्र होगा अगर इस क्षेत्र में कौशल विकास में निवेश, नई प्रौद्योगिकियों को अपनाना, तथा श्रमिकों की सुरक्षा और कल्याण में सुधार के लिए पहल की जाये ।

सुझाव: निर्माण श्रमिकों के सामने आने वाली चुनौतियों को देखते हुए, उनके कल्याण के लिए कुछ सुझाव दिए गए हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्माण श्रमिकों के कौशल को बढ़ा सकते हैं, उन्हें अपने काम में अधिक कुशल और उत्पादक बना सकते हैं, इसलिए उनके कौशल को विकसित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए।

निर्माण श्रमिकों के स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती का ध्यान रखना आवश्यक है इसलिए उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने और अपने कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक निभाने के लिए स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए।

प्रोत्साहन कार्यक्रम: प्रदर्शन-आधारित पुरस्कार कार्यक्रमों को लागू करने से निर्माण श्रमिकों को अधिक उत्पादकता और कुशलता से काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

हम भारत के निर्माण श्रमिकों को बेहतर जीवन जीने और देश के विकास में अधिक महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम बना सकते हैं, इसके लिए हमें प्रति घंटे काम करने के घंटों पर पुनर्विचार करना होगा, वेतन अंतर को दूर करना होगा और नौकरी की दक्षता बढ़ाने के लिए विचारों को व्यवहार में लाना होगा।

उद्योग में लाखों नए रोजगार जोड़ने और सही निवेश और नीतियों के साथ आने वाले वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था को और बढ़ावा देने की क्षमता है।इसमें श्रमिक सुरक्षा और कल्याण को बढ़ाने, कौशल विकास में निवेश और नई तकनीकों को अपनाने के लिए कार्रवाई शामिल है।

References:

1. Dhamal G. (2018), Rights of Construction Workers in India, Research Directions, Vol: 6 Issue: 5, November 2018, ISSN NO – 2321-5488, http://www.researchdirections.org/
2. Nagraj R. (2016), Employment Boom in Construction: A Tentative Explanation, Draft Paper, Indira Gandhi Institute of Development Research, Mumbai
3. Tiwary, Guddi; Gangopadhyay, P. K.1; Biswas, S.2; Nayak, K.; Chatterjee, M. K.; Chakraborty, D.; Mukherjee, S.. Socio-economic status of workers of building construction industry. Indian Journal of Occupational and Environmental Medicine 16(2):p 66-71, May–Aug 2012. | DOI: 10.4103/0019-5278.107072
4. Khan J. H., Alam P., and Ahmed N. (2015), Socio-Economic Condition of Construction Workers: A Case Study, International Journal of Advanced Research (2015), Volume 3, Issue 10, 795 – 802
5. Raj D., and Singh B. P. (2018), Demographic and Socio-Economic Profile of Labourers in Construction Industry of Varanasi City (India), Journal of Statistics Applications & Probability, J. Stat. Appl. Pro. 7, No. 1, 151-159 (2018).
6. Tiwary, et al. (2012), Socio-economic status of workers of building construction industry, Indian Journal of Occupational and Environmental Medicine - August 2012 - Volume 16 - Issue 2, Pg 66-71.
7. Kumar S. (2024), Construction Workers in India, https://www.linkedin.com/pulse/construction-workers-india-ar-saran-kumar-zzogc
8. Digital Labour Chowk (2023), Current Status and Future Prospects of India's Construction Sector, https://www.linkedin.com/pulse/current-status-future-prospects-indias-construction-zabyc
9. Knight Frank (2023), Skilled Employment in Construction Sector in India, https://www.knightfrank.co.in/research

10. Economic Times (Aug 03, 2023), India's construction sector second largest employment generator: Report, https://economictimes.indiatimes.com/industry/indl-goods/svs/construction/indias-construction-sector-second-largest-employment-generator-report/articleshow/102399804.cms
11. Disha Foundation, Why Focus on Construction Workers? https://dishafoundation.ngo/impact_stories.html
12. Sicagen (2024), Why India is the fastest-growing construction market, https://www.sicagen.com/why-india-is-the-fastest-growing-construction-market/

International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies
IRJHIS